MA 3rd

Total number of printed pages–8

14 (HIN-3) 3·1

2018

HINDI

Paper : 3·1

(New Syllabus & Old Syllabus)

(Ādhunik Kāvya–I)

Full Marks : 64/80

Time : Three hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

(New Syllabus)

(आधुनिक काव्य-I)

कुल अंक : 64

निम्नलिखित अवतरणों में से ***किन्हीं दो*** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×2=16

(क) अवध को अपनाकर त्याग से,
वन तपोवन-सा प्रभु ने किया।
भरत ने उनके अनुराग से,
भवन में वन का व्रत ले लिया!

Contd.

(ख) था एक हाथ में कर्म कलश वसुधा जीवन रस सार लिये
दूसरा विचारों के नभ को था मधुर अभय अवलंब दिये
त्रिबली थी त्रिगुण तरंगमयी, आलोक वसन लिपटा अरुल
चरणों में थी गति भरी ताल।

(ग) धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का न हो सका।

(घ) विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली!

2. "ऊर्मिला के विरह-वर्णन की विचार-धारा में भी मैंने स्वच्छन्दता से काम लिया है।" — साकेतकार के प्रस्तुत कथन के आलोक में ऊर्मिला के विरह-वर्णन की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

'साकेत' महाकाव्य के नवम सर्ग के कलापक्षीय सौन्दर्य पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

3. श्रद्धा की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिए। 12

अथवा

'कामायनी' महाकाव्य के इड़ा सर्ग के महत्व का आकलन कीजिए।

4. शोक-गीत की विशेषताओं की दृष्टि से 'सरोज-स्मृति' की समीक्षा कीजिए। 12

अथवा

पठित कविताओं के आधार पर महादेवी वर्मा के काव्य-वैभव पर सम्यक् प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं तीन*** के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 4×3=12

(क) "करुणे, क्यों रोती है ?" — इस प्रश्न के उत्तर में करुणा ने क्या कहा ?

(ख) "अवधि-शिला का उर पर था गुरु भार,
तिल तिल काट रही थी दृग-जल-धार।"
— इन काव्य-पंक्तियों में
निहित कलापक्षीय सौन्दर्य का आकलन कीजिए।

(ग) "दुःख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात।"
— इन काव्य-पंक्तियों का आशय बताइए।

(घ) "शक्ति की करो मौलिक कल्पना," — किसने, किससे और कब शक्ति की मौलिक कल्पना करने का परामर्श दिया था ?

(ङ) महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए।

(च) महादेवी वर्मा को क्यों 'आधुनिक युग की मीराँ' कहा जाता है ?

(Old Syllabus)

(आधुनिक काव्य-I)

कुल अंक : 80

1. निम्नलिखित अवतरणों में से ***किन्हीं तीन*** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×3=24

(क) सींचें ही बस मालिनें, कलश लें, कोई न ले कर्त्तरी,
शाखी फूल फलें यथेच्छ बढ़के, फैलें लताएँ हरी।
क्रीड़ा-कानन-शैल यन्त्र-जल से संसिक्त होता रहे,
मेरे जीवन का, चलो सखि, वही सोता भिगोता बहे!

(ख) बनो संसृति के मूल रहस्य,
तुम्हीं से फैलेगी यह बेल ;
विश्व भर सौरभ से भर जाय
सुमन से खेलो सुन्दर खेल।

(ग) मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल,
दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही!

(घ) प्रथम रश्मि का आना रंगिणि!
तूने कैसे पहचाना ?
कहाँ-कहाँ हे बाल-विहगिनि!
पाया तूने यह गाना ?

(ङ) सिहर सिहर उठता सरिता-उर,
खुल खुल पड़ते सुमन सुधा-भर,
मचल मचल आते पल फिर फिर,
सुन प्रिय की पद-चाप हो गयी
पुलकित यह अवनी!
सिहरती आ वसन्त-रजनी!

2. 'साकेत' के नवम सर्ग के आधार पर ऊर्मिला की विरह-दश का चित्रण कीजिए। 1

अथवा

'साकेत' महाकाव्य के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिए

3. " 'कामायनी' में लज्जा का सुन्दर मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है।" — प्रस्तुत कथन की सार्थकता प्रमाणित कीजिए। 1

अथवा

'कामायनी' के श्रद्धा सर्ग के भाषा-शैलीगत सौन्दर्य पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

4. "मौन-निमंत्रण' शीर्षक कविता के काव्य-वैभव का आकलन कीजिए। 1

अथवा

पठित कविताओं के आधार पर महादेवी वर्मा के काव्य-स्वरों पर सम्यक् प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से ***किन्हीं चार*** प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 5×4=20

(क) "विफल जीवन व्यर्थ बहा, बहा," — कवि ने जीवन के व्यर्थ बहने की बात क्यों की है ?

(ख) "मानस-मन्दिर में सती, पति की प्रतिमा थाप,
जलती-सी उस विरह में, बनी आरती आप!"
— इन काव्य-पंक्तियों में निहित कला-पक्षीय सोन्दर्य का आकलन कीजिए।

(ग) "कर्म का भोग, भोग का कर्म
यही जड़ का चेतन आनन्द।"
— इन काव्य-पंक्तियों का आशय बताइए।

(घ) 'कामायनी' महाकाव्य की लोकप्रियता के *चार* कारण बताइए।

(ङ) "तुम फेर रहे हो पीठ, हो रहा जब जय रण!"
—किसने, किससे और कब ऐसा कहा था ?

(च) 'परिवर्तन' शीर्षक कविता का संदेश क्या है ?

(छ) महादेवी वर्मा ने क्यों कहा है— 'क्या पूजन क्या अर्चन रे ?'